भगवत् कृपा
THE DIVINE GRACE

गुरुभक्ति यज्ञ 1937 - 1997

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 9	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
गुरुवार 26/9/96	सितम्बर-1996	प्रति अंक : 5.00

''जय अमर गुणातीत भावना......''

शरद्पूर्णिमा.... साकार ब्रह्म मू.अ.मू. गुणातीतानंद स्वामी का प्रागट्य दिन... जिसके प्रगट होने से सनातन धर्म की अखंड व अविनाशी विचारधारा मानवजाति के लिए यावदच्चन्द्रदिवाकरौ अमर व अखंड बनी.... इनके अस्तित्व और व्यक्तित्व से परमतत्व की सचेतना धरती पर प्रगट रही- जिससे कोई भी श्रेयार्थ साधक-फिर चाहे वह कोई भी धर्म का क्यों न हो? परन्तु वह आत्यंतिकी मुक्ति को पाकर, ब्राह्मीस्थिति के रूप में जीवनमुक्ति सिद्ध कर पाएगा और अक्षरधाम का सुख स्वयं अखंड लेकर अन्य को भी बांट पायेगा। यूं गुणातीत स्वरूप की वह अमर भावना सब-सब के ईष्टदेव के मानवस्वरूप में प्रगटीकरण के रूप में श्रीजी महाराज ने मानव जाति को केवल करुणा के रूप में बक्षीश दी। ऐसे दिव्य विग्रह व्यक्तिस्वरूप मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को करोड़ों वंदन !

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी अर्थात्-भगवान स्वामिनारायण के अखंड रहने का प्रत्यक्ष धाम...दीक्षा देते हुए महाराज ने नाम भी कैसा दिया? सत्व, रज और तम- तीन गुणों से पर, जागृत-स्वप्न-सुषुप्ति से पर शब्दातीत, भावातीत, ''गुणातीत''.......

जैसे सद्. रामानंदस्वामी ने पुराने बड़े संतों की हाज़िरी में छोटी उम्र के नए-नए नीलकंठ वर्णी-सहजानंदस्वामी को अपना वारिसदार चुनकर गद्दी सौंपी, वैसे ही महाराज ने उन सभी संतों की हाज़िरी में ही नए व छोटी आयु के गुणातीतानंदस्वामी को स्वयं के रहने का 'अक्षरधाम' बताया था ! भक्तसहित भगवान की उपासना के लिए महाराज ने गुणातीत की आराधना का निर्देश भी किया और छोटे-बड़े सभी को हर वर्ष गुणातीत का समागम करने की आज्ञा करी। महाराज ने कहा था कि–**'जो जूनागढ़ जायेगा उसकी कोटि जन्म की कसर इसी जन्म में टलेगी।'**

इसे प.पू. काकाजी अलग ढंग से कहा करते कि– **'अनन्त साधन करने के बावजूद भी जीव का जो शुद्धिकरण ना हो, वह अखंड गुणातीतभाव में रहते स्वरूप के प्रति सद्भाव रखने मात्र में होगा और ऐसे संत के द्वारा आत्यांतिक कल्याण का द्वार सदा काल के लिए खुला रहेगा।'**

मूलवृत्ति एक या दूसरे रूप में–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, मद, मत्सर के रूप में या देहाभिमान के रूप में या ऐश्वर्य प्रताप की चाहना द्वारा मुक्तों को भी भगवान के स्वरूप को तत्व से वे जैसे हैं, वैसे पहचान कर सुख लेने में बाधारूप होती है। पर, गुणाताती ने धरती पर आकर आध्यात्मिक विकास के साधनमात्र पर सेरे लगा दिए... और ऐसे संत के प्रति सद्भावना रखने वाले को बक्षीश में ही निर्वासनिक कर दिया। इससे भी अधिक गुणातीत ज्ञान में गुरुमुखी साधक मूलवृत्ति से छुटकारा पाकर उसका जीव ब्रह्मरूप हो जाता है और जीते जी परब्रह्म का धारक बनकर साधुता के गुणों से युक्त जीवन जीकर समग्र सत्संग को दिव्य मानकर सुहृदभाव बढ़ाता जाता है...

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ऐसा ही अद्भुत जीवन जीए जो युगों तक जीवमात्र के लिए कल्याणकारी व आदर्शरूप रहेगा ही.. पर ऐसे संत में अनन्यभाव व निर्गुणभाव रखकर उनकी मर्जी में रहने में ही सारी साधना निहित है–**यही गूढ़तम रहस्य है।** तो आईए, शरदपूर्णिमा के मंगल अवसर पर स्वामिश्री के जीवन के निम्न प्रसंग निहारें–

❃ स. 1910 की सर्दियों के दिनों में आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज जूनागढ़ पधारे थे। इस दौरान गांव सांखड़ावदर के

खेत में अस्सी हज़ार फूस के ढेर कटे हुए तैयार पड़े थे। पू. गुणातीतानंदस्वामिजी को उन्हें संभालने का इन्तज़ाम करना था, सो उन्होंने मंदिर में एक-एक करके सभी को पूछा कि तुम सांखडावदर जाओगे? परन्तु रघुवीरजी महाराज जूनागढ़ पधारे हुए थे और तब तो मंदिर में भारी-भारी रसोईयां बननी थी व कथावार्ता वगैरह का भी अनमोल लाभ मिलने वाला था, सो यह सब छोड़कर वहां जाने भला कौन तैयार होता? आखिर स्वामिश्री ने स्वामी जागाभक्त को पूछा कि 'तुम सांखडावदर जाओगे?' सुनते ही पू. जागाभक्त की आंखों में पानी आ गया.... उन्होंने हाथ जोड़कर रुंधे गले से स्वामिश्री को कहा कि–आपको तो मुझे यही कहना चाहिए– 'तुझे वहां जाना है।' **मैं तो आपका सेवक हूं।** आपकी आज्ञा वही मेरे लिए उत्सव है। स्वामीश्री उनके यह भक्तिभाव के वचन सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए और एक सेवक को उनके साथ सांखडावदर भेजा। यूं स्वामी जागाभक्त स्वामीश्री की आज्ञा से सांखडावदर गए। श्रीजी महाराज की मूर्ति भी उनके साथ गई !

यहां जूनागढ़ में आचार्य महाराज तेईस दिन रहे। तब तक स्वामी जागाभक्त भी स्वामिश्री की मर्जी के मुताबिक वहीं रहे। वहां उन्हें श्रीजी महाराज अखंड दर्शन देते और साथ में ही रहते। इससे भी अधिक जूनागढ़ में हो रहे सारे उत्सव का हुबहु दर्शन भी उन्हें वहीं होता रहा। आखिरी दिन, स्वामिश्री ने दो पार्षदों को भेजकर जागाभक्त को जूनागढ़ बुलाया। जागाभक्त जूनागढ़ आए और आचार्य महाराज के दर्शन करने गए। आचार्य महाराज वड़ताल वापिस जाने निकलने की तैयारी में ही थे। स्वामिश्री भी उनके साथ उनकी गाड़ी में बैठे थे। जागाभक्त को देखकर स्वामिश्री ने आचार्य महाराज को कहा कि–'आप जब तक यहां रहे, तब तक यह जागाभक्त हमारी आज्ञा से सांखडावदर रहे, परन्तु उत्सव का लोभ इन्होंने नहीं रखा।' यह बात सुनकर आचार्य महाराज बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने जागाभक्त को छाती में चरणार्विंद देकर गले लगाकर कहा–'गुणातीतानंदस्वामी की आज्ञा तो श्रीजी महाराज की आज्ञा है और स्वामिश्री की प्रसन्नता वो श्रीजी महाराज की प्रसन्नता है। इन दोनों में कभी भी फर्क समझना ही नहीं। स्वामिश्री तो महाराज के अंग ही हैं। इस प्रकार आचार्य महाराज ने स्वामिश्री की महिमा कही। यह सुनकर स्वामिश्री ने कहा कि यह जागाभक्त तो अनादि के मुक्त हैं और हमारे अनादि के सेवक हैं। वर्ना तो ऐसी आज्ञा पाली ही नहीं जा सकती।'

यह प्रसंग हम अपने पर लेकर सोचें कि अगर मंदिर में ऐसा बड़ा उत्सव हो-भव्य स्वरूपों पधारे हों, कथावार्ता वगैरह का अनुपम लाभ मिलने वाला हो, तो हम अहोभाव से अपने मन को ठुकराकर ऐसी कठिन आज्ञा पालने जा सकेंगे? पर, साधु के अन्तर की प्रसन्नता तो जागास्वामी की तरह खुद को मिटाने वाले पर ही होगी ना?

एक पहलु और भी है-कई बार ऐसा भी होता है कि हमारा मन मंदिर से या सत्पुरुष से खट्टा जैसा हुआ हो.. और मंदिर से कहीं बार जाने का कार्यक्रम बने। हमने मन में ज़िद पकड़ रखी हो कि हमें साथ में जाना ही नहीं है। और... साधु के पास चालाकी से एक सात्विक आड़ या बहाना लेकर कहें कि–'मैं मंदिर में ही रुक जाऊंगा... आखिर मंदिर संभालने-देखरेख के लिए भी तो कोई चाहिए ना!' दूसरे तो शायद हमारी यह चालाकी ना समझ पाएं-पर अपने अंदर का जोगी और सत्पुरुष तो मन की चोरी जानता ही है... जिस तरह उत्सव के कार्यक्रमों के लालच में संत की आज्ञा की अवज्ञा करके मंदिर में रुके रहना वो अपनी हार है, ठीक वैसे ही संत के कहने पर भी साथ में ना जाने की ज़िद पकड़े रखकर उनकी आज्ञा की अवज्ञा करने में भी हमारी हार है... असल में तो **सत्पुरुष की मर्जी से हाँ से हाँ और ना ने ना करने में सही अर्थ में सेवक का दासभाव है** और वही सेवक सत्पुरुष से सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है.....

अब दूसरा प्रसंग निहारे–

स्वामिश्री रघुवीरजी महाराज के साथ निकले तो पहले बगसरा गांव पहुंचे। वहां से कुंकावाव होकर गोखरवाळा गांव आए। स्वामिश्री गोखरवाळा पधारे हैं यह खबर मिलते ही दाडमा से नथु भट्ट भक्त भी वहां दर्शन करने आए। नथु भट्ट् ने स्वामिश्री को अपने गांव पधारने का आग्रह किया। उसका अत्यंत भाव देखकर स्वामिश्री ने उसे कहा कि–'तू साल में दो बार संतों को घर ले जाता है। लेकिन हमें तो तेरी आर्थिक स्थिति की ओर देखना चाहिए?' यह सुनकर नथु भट्ट ने हाथ जोड़कर कहा कि–'महाराज! आप हमारे घर पधारो, उससे ही तो हमारे हालात सुधरते हैं। नहीं तो लाखों रुपये हों तो भी हालात बिगड़े हुए ही हैं। स्वामिश्री उसकी समझदारी देखकर बहुत प्रसन्न हुए और दो दिन गोखरपाळा में रुक कर दाडमा गांव पधारे।'

कई बार हमारे मन में होता है कि **पहले अपना व्यवहार संभाल कर–अपने लिए पहले बचाकर संतों को सेवा करें, पर असल में हमें ख्याल ही नहीं कि संतों की सेवा से ही हमारा व्यवहार सुखी है। हमारी थोड़ी सेवा लेकर वो हमारे कितने प्रारब्ध टालते हैं। पर, हमारी व्यावहारिक व सीमित बुद्धि भला यह कहां से समझ पायेगी?**

इसी गुणातीत परम्परा के वारिसदार प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन यानि-दशहरा और फिर गुरुपूर्णिमा मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्यदिन और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन है। प.पू. स्वामिजी आज प्रभु के एक दिव्य विग्रह के रूप में अद्भुत

कार्य करके गुरुहरि योगीजी महाराज का नाम देश-विदेश में फैला रहे हैं... करोड़ों वंदन उन्हें हों.....

आईये, इस त्रिवेणी संगम के पवित्र अवसर पर हम सब युगल उपासना के इन परमतत्वों को प्रार्थना करें कि हमें मिले प्रत्यक्ष स्वरूप में परात्परस्वरूप के प्रगटपन की परिपक्व निष्ठा सभी को हो जाए और परब्रह्म के साथ एकता साध कर परात्परस्वरूप की अनंतता के परमानंद का सुख प्राप्त करें....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

526 नींद आए तो सो जाना चाहिए। सुरंगे उड़ाने की बात करी तथा किसी प्रकार शत्रु को जीत पाए ऐसा नहीं हो, तो अंग्रेज ने लड़ाई में सफ़ेद धुआं फैलाकर दुश्मन की फौज को छल से मार दी, यूँ छल करना और मन को जीतना।

प्र-5,363

527 कई प्रकार के पापी जीव हैं, उन्हें यह ज्ञान देना-वही भगवान का प्रताप है।

प्र-5,364

528 मध्य का 28वाँ वचनामृत पढ़ाकर बात करी कि जीव तो गलती कर जाये, लेकिन कई युक्तियाँ करके उसे भगवान के मार्ग में टिका रखना, पर उसे गिरने नहीं देना-यही बड़े का बड़प्पन है। इस वचनामृत में महाराज ने स्वयं का स्वभाव कहा हो, ऐसा भाव भी आता है। यूं बहुत ही महिमा की बात करी।

प्र-5,365

529 भगवान और भगवान के भक्त की सेवा-ये दोनों में ही माल है।

प्र-5,366

530 मुमुक्षु जीव को ज्ञान भी हो सकता है और लगाव भी जरूर हो; परन्तु सत्संग में जो कुसंग है-वह उसका बुरा कर डालता है, सो उसे पहचानना।

प्र-5,367

531 जूनागढ़ में जो-जो हैं, उन सभी को मारकूट कर-चाहे कैसे भी ठीक करके पार उतारना है। तो तुम्हें तो क्यों फिक्र करनी? कितने दिन जीना है?

प्र-5,369

532 सुखी होने के रास्ते-एक तो किसी प्रकार भगवान में जुड़ा हुआ हो तथा संत से जुड़ा हो या आत्मज्ञान से इन्द्रियों पर संयम कर लिया हो और भगवान का निश्चय सहित वैराग्य हो व संस्कारी जीव हो-ये पांच प्रकार से सुखी रहा जाए। सो स्वयं का अन्तर टटोल लेना कि इनमें से मेरा कौन-सा अंग है। इसे समझ कर सुखी रहना।

प्र-5,370

533 भगवान के अक्षरधाम की ओर दृष्टि-वह अलौकिक दृष्टि है और प्रकृति के कार्य की ओर देखना-वो लौकिक दृष्टि है। उसमें भगवान का निश्चय-वह सच में अलौकिक दृष्टि है।

प्र-5,371

534 संत से जुड़ा हो उसका यह लक्षण कि उसकी मर्जी में राजी हो और संत कहे उतना ही काम करे, लेकिन अधिक करे नहीं। ऐसे की फिक्र तो संत को रहती है। सो-पांच दिन, महिना, दो महीने या चार महीने पर वे उसकी खबर रखा करें और यूं खबर नहीं रखें तो वह बिगड़ जाए। सो खबर रखते हैं। तमोगुणी तो कुछ समझेगा नहीं; अतः उसे तो उसी की मर्जी पर चलने दें तो ठीक रहे और मचेड़े तो परेशान हो जाए।

प्र-5,372

535 यह मौका फिर नहीं आएगा। अभी तो कपड़े तक जलाकर भी ताप लो, ऐसा है।

प्र-5,362

536 मैं मंदिर में हूं तब किसी को बाहर जाने का मन नहीं करता और मैं बाहर जाऊं तब कोई मंदिर में रहता नहीं।

प्र-5,375

✡✡✡

सूचना

'अनिर्देश' स्वामिनारायण मंदिर-दिल्ली में अब फैक्स की सुविधा कर दी गई है।
तो कृपया वह नम्बर 7219327 आप नोट कर लें।
अब आप आसानी से मंदिर में ही सीधे फैक्स कर सकते हैं।

गुरुजी धरती पे आए....

(राग–मेरे ख्वाबों में जो आए...)

गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
गुरुजी धरती पे आए...ss...
सुख ये मूर्ति का लुटाएं
गुरुजी धरती पे आए...ss...

अनहद् प्रीति काकाजी से तुम्हारी -2
अभिप्राय उनका ज़िन्दगी है तुम्हारी।
काकाजी का दिव्य सर्जन हो तुम,
अखंड प्रभु के धारक साधु हो तुम।
काका को रखते आगे, पल-पल तुम ऐसा जीते,
काकाजी की अनुभूति कराएँ...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
गुरुजी धरती पे आए...sss

काकाजी को अखंड धारे हुए हैं-2
भक्तों के दिल में जो समाए हुए हैं।
हमारे *'लेवल'* पर आ जाते हैं वो,
सामर्थ्य अपना छूपाते हैं वो।
महिमा हम जान लें, स्वरुप पहचान लें,
सार्थक हम जन्म अब अपना बनाएं...

गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
गुरुजी धरती पे आए...
लाई सत्संग में हमें कामनाएं सारी -2
प्रभु की मूर्ति ना थी माँग हमारी।
फिर भी अनुभव प्रभु का करवा के,
निरंतर उद्यम तुमने ही करके।
गरजु भी खुद बनके, भजन भी कर-करके,
प्रभु पाने की चाह तू ही प्रगटाए...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...

संप, सुहृद्भाव दिल में बसा के-2
सरल बनें और मैत्रीभाव बढ़ा के।
गुरुभक्ति यज्ञ को सार्थक कर लें,
हठ, मान, ईर्ष्या की आहुति दे दें।
मन-बुद्धि छोड़ के, अहंता तोड़ के,
सपना तेरा साकार कर पाएं...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
ला ला ला ला ...

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	30.9.96	सोमवार	– ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध
2. दि.	6.10.96	रविवार	– श्रीजी महाराज और ब्र.स्व. जागास्वामी का श्राद्ध
3. दि.	7.10.96	सोमवार	– एकादशी का श्राद्ध, ब्र.स्व. योगीजी महाराज का श्राद्ध
4. दि.	8.10.96	मंगलवार	– एकादशी, व्रत
5. दि.	9.10.96	बुधवार	– ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का श्राद्ध
6. दि.	10.10.96	गुरुवार	– मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का श्राद्ध
7. दि.	11.10.96	शुक्रवार	– ब्र.स्व. भगतजी महाराज का श्राद्ध
8. दि.	13.10.96	रविवार	– नवरात्रे प्रारंभ
9. दि.	21.10.96	सोमवार	– दशहरा, प्र.ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
10. दि.	22.10.96	मंगलवार	– एकादशी, व्रत
11. दि.	26.10.96	शनिवार	– शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्यदिन प्र.ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053